ISSN:2583-8849

धन्ना भगत

1-

धन्नो कहै ते धिग नरां, धन देख्यां गरबाहिं।
धन तरवर का पानड़ा, लागै अर उड़ि जाहिं॥

धन्ना धन ते संत जन, जे पैठे पर भीड़।
संधि कटावै आपणी, रती न आवै पीड़॥

धरणीधर व्यापक सबै, धरणि ब्यौम पाताल।
धन्नो कहै धनि साध ते, बिसरै नहिं कहूँ काल॥

धन्ना धिन्न ते मानवी, धरणीधर सूं प्रीति।
राति दिवस बिसरै नहीं, रसना उर मन चीति॥

धन्ना कहै हरि धरम बिन, पंडित रहे अजाण।
अणबाह्यौ ही नीपजै, बूझौ जाइ किसाण॥

2-

गोबिंद गोबिंद गोबिंद संगि नामदँउ मनु लीणा।
आढ दाम को छीपरो होइउ लाषीणा॥रहाउ॥
बुनना तनना तिआगिकैं, प्रीति चरन कबीरा।
नीचा कुला जोलाहरा भइंउ गुनीय गहीरा॥
रबिदासु ढुवंता ढोरनी, तिन्हि तिआगी माइआ।
परगटु होआ साथसंगि, हरि दरसनु पाइआ॥
सैंनु नाई बुतकारीआ, उहु धरिघरि सुनिआ।
हिरदे बसिआ पारब्रह्म भगता महि गनिआ॥
इह बिधि सुनिकै जाटरो, उठि भगती लागा।
मिले प्रतषि गुसाईआं, धंना बड़भागा॥

3-

गोपाल तेरा आरता।
जो जन तुमरी भगति करने, तिनके कांज सँवारता॥रहाउ॥
दालि सीधा माँगउ घीउ, हमरा षुसी करैं नित जीउ।
पन्ही आछादनु नीका, अनाज मंगउ सतसीका॥
गऊ भैंस माँगउ लावेरी, इक ताजनि तुरी चंगेरी।
घर की गीहनि चंगी, जनु धना लेवै भंगी॥

4-

ना जानौं राम कैसा जोगी, अनेक गुफा मधुसूदन भोगी॥
खीर खांड घ्रित अंम्रित भोजन, साधनि न्यौंति जिमाऊँ।
या कुटी छाडौं और निवासौं, बहुरि न या कुटि आऊँ राम॥
आवत जात बहुत मैं किये, इहां न रहणा होई।
भगत धन्ना जाट सेवग तेरा, हंस चल्या कुटि रोई॥

5-

भ्रमत फिरत बहुत जनम बिलाने, तनु मनु धनु नहीं धीरे।
लालच बिषु काम लुबध राता, मनि बिसरे प्रभही रे॥रहाउ॥
बिषु फल मीठ लगे मन बउरे, चार बिचार न जानीआ।
गुन ते प्रीति बढ़ी अनभांती, जनम मरन फिरि तानिआ॥
जुगति जानि नही रिदै निवासी, जलत जाल जम फंध परै।
विषु फल संचि भरे मन ऐसै, परम पुरष प्रभ मन बिसरे॥
गिआन प्रवेस गुरहि धनु दीआ, धिआनु मानु मन एकमए।
प्रेम भगति मानी सुषु जानिआ, त्रिपति अघाने मुकति भए॥
जोति समाए समानी जाकै, अछली प्रभु पहिचानिआ।
वंनै धनु पाइआ धरणीधरु, मिलि जन संत समानिआ॥